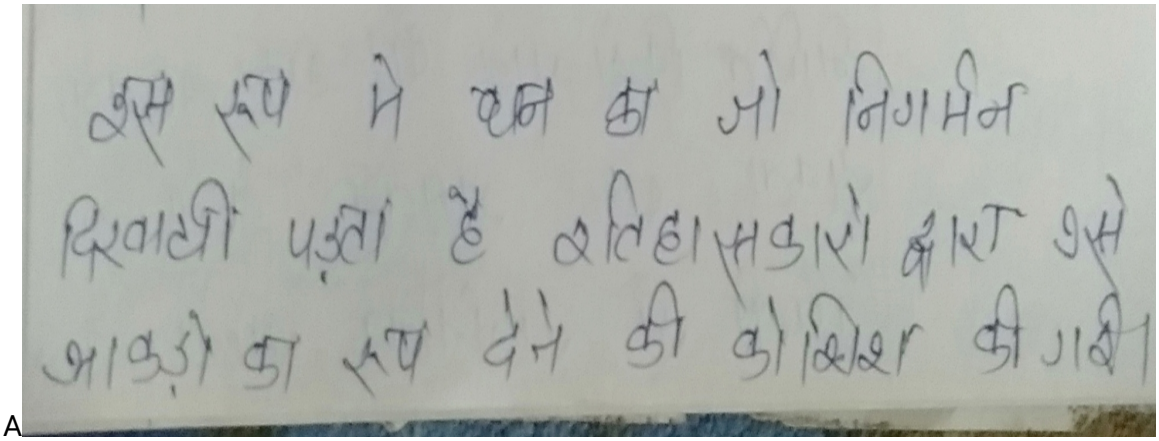

इस रूप मे धन का जो निगमिन दिखायी पड़ता है इतिहासकारो द्वारा इसे आकड़ो का रूप देने की कोशिश की गयी

A

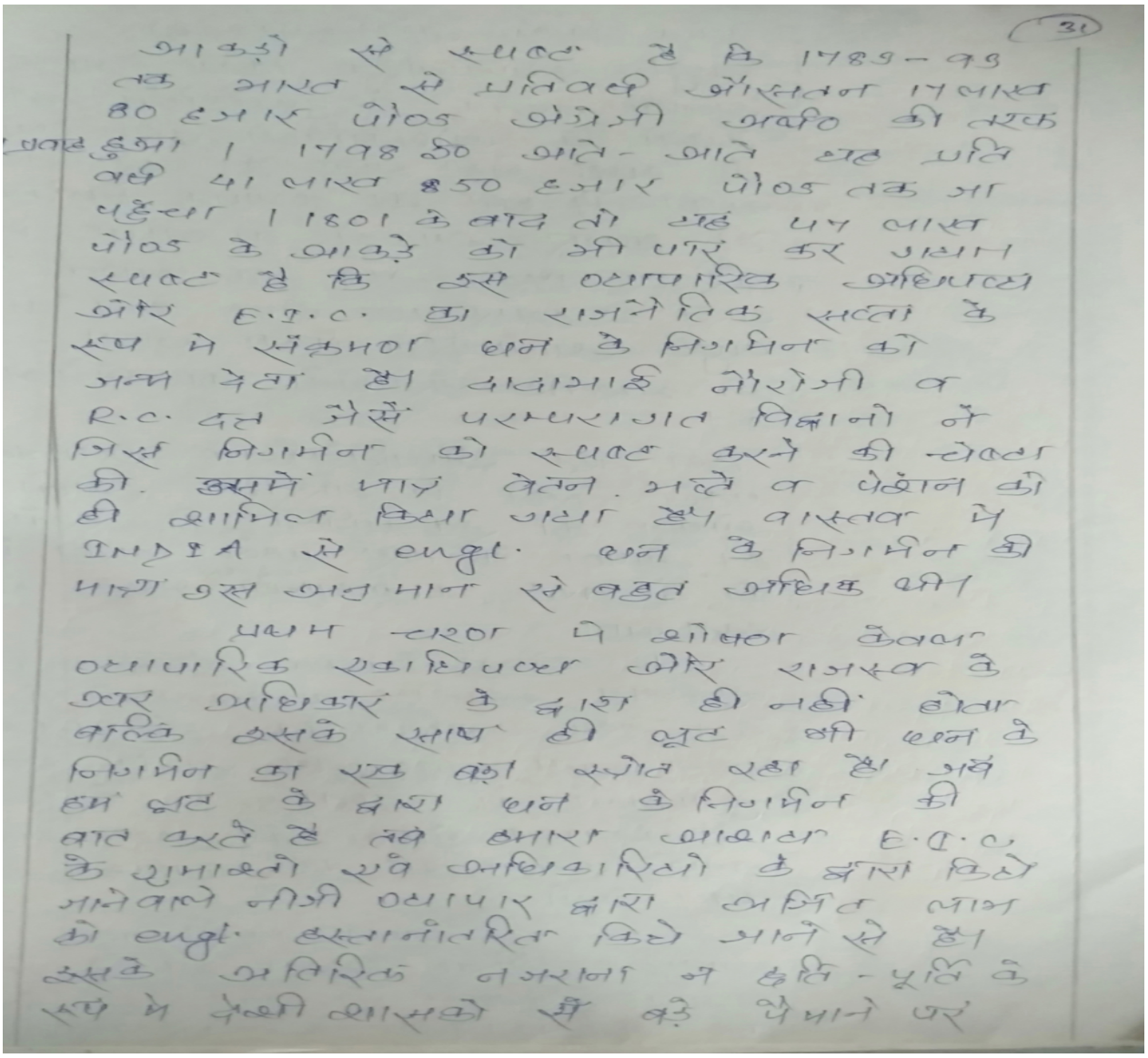

आकड़ो से स्पष्ट है कि 1783-93 तक भारत से प्रतिवर्ष औसतन 17 लाख 80 हजार पौण्ड अंग्रेजी अर्थ० की तरफ प्रवाह हुआ। 1798 ई० आते-आते यह प्रति वर्ष 41 लाख 850 हजार पौण्ड तक जा पहुँचा। 1801 के बाद तो यह 57 लाख पौण्ड के आकड़े को भी पार कर गया। स्पष्ट है कि इस व्यापारिक अधिपत्य और E.I.C. का राजनैतिक सत्ता के रूप मे संक्रमण धन के निगमिन को जन्म देता है। दादाभाई नौरोजी व R.C. दत्त जैसे परम्परागत विद्वानो ने सिर्फ निगमिन को स्पष्ट करने की चेष्टा की। इसमें मात्र वेतन, भत्ते व पेंशन को ही शामिल किया गया है। वास्तव मे INDIA से engl. धन के निगमिन की मात्रा इस अनुमान से बहुत अधिक थी

प्रथम चरण मे शोषण केवल व्यापारिक एकाधिपत्य और राजस्व के ऊपर अधिकार के द्वारा ही नहीं होता बल्कि इसके साथ ही लूट भी धन के निगमिन का एक बड़ा स्रोत रहा है। जब हम लूट के द्वारा धन के निगमिन की बात करते है तब हमारा आशय E.I.C के गुमाश्तो एवं अधिकारियो के द्वारा किये जानेवाले नीजी व्यापार द्वारा अर्जित लाभ को engl. हस्तानांतरित किये जाने से है। इसके अतिरिक्त नजराना व क्षति-पूर्ति के रूप मे देशी शासको से बड़े पैमाने पर

प्राप्त किये गये धन से है जिसे england स्थानांतरित किया जाता है। इसके अलावा दस्तक के दुरुपयोग द्वारा भी कंपनी के अधिकारियों द्वारा अर्जित धन को england भेजा जाता है। इस तरह पहले चरण में धन का व्यापक निर्गमन दिखता है। अगर आंकड़ो की भाषा मे बात करें तो 1757-79 तक भारत से 18 लाख 23 हजार 407 पौण्ड धन प्रतिवर्ष england स्थानांतरित किया गया। यह भी भारतीय संसाधनो का अंग्रेजी निर्गमन है।